# "भक्त" की भक्ति

1. जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै । भगत जनां कउ देहुरा फिरै ।

अर्थः- ज्यों-ज्यों नामा अपने प्रभु के गुण गाता है, (उसका) मन्दिर (उसके) भगतों की खातिर, (उसके) सेवकों की खातिर फिरता जा रहा है ।

हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ । भगत करत नामा पकर उठाइआ ।

**अर्थः-** भक्त नाम देव जी बड़े चाव से मन्दिर में अंदर आये थे, पर (चुँकि ये लोग 'मेरी जाति हीनड़ी' समझते हैं, इन लोगों ने) मुझे नामे को भक्ति करते को (बाँह से) पकड़ कर (मन्दिर में से) उठा दिया ।

हीनड़ी जात मेरी जादिम राइआ । छीपे के जनम काहे कउ आइआ ।

**अर्थः-** हे प्रभु ! मैं छींबे (धोबी) के घर क्यों पैदा हो गया ? (लोग) मेरी जाति को बड़ी नीच (कहते हैं) ।

लै कमली चलिओ पलटाइ । देहुरै पाछै बैठा जाइ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1164)

**अर्थः-** मैं अपनी कंबली ले के (वहाँ से) वापस चल पड़ा, और (हे प्रभु!) मैं तेरे मन्दिर के पिछली तरफ जा के बैठ गया ।

**नोटः-** भक्त नाम देव जी ने अपनी उम्र का ज्यादा हिस्सा पंडरपुर में गुजारा; वहाँ के वाशिंदे जानते ही थे कि नामदेव धोबी है, और शूद्र है । शूद्र को मन्दिर में जाने की मनाही थी । किसी दिन बँदगी की मौज में नामदेव मन्दिर चले गए, आगे ऊँची जाति वालों ने बाँह से पकड़ कर बाहर निकाल दिया । अगर नामदेव किसी बीठुल, किसी ठाकुर की मूर्ति के पुजारी होते और पूजा करते होते तो रोज आने वाले नामदेव को उन लोगों ने किसी एक दिन 'हीनड़ी जाति' का जान के क्यों बाहर निकालना था ? ये एक दिन की घटना ही बताती है कि नामदेव जी ना मन्दिर जाया करते थे, शूद्र होने की वजह से

उच्च जाति वालों की तरफ से उन्हें वहाँ जाने की आज्ञा नहीं थी । यह तो एक दिन किसी मौज में आए हुए चले गए और आगे से धक्के नसीब हुए ।

ब. मो कउ तूं न बिसार - तू न बिसार । तू न बिसारे - रामईआ।

अर्थ:- हे सुंदर राम ! मुझे तू ना बिसारना, मुझे तू ना भुलाना, मुझे तू ना बिसारना ।

आलावंती इहु भ्रम जो है - मुझ ऊपर सभ कोपिला । सूद-सूद कर मार उठाइओ - कहा करउ बाप बीठुला ।

अर्थ:- इन पण्डियों को यह वहम है कि ये ऊँची जाति वाले हैं, इस करके ये सारे मेरे ऊपर गुस्से हो गए हैं; शूद्र-शूद्र कह: कह के और मार-पीट के मुझे इन्होंने उठा दिया है । हे मेरे बीठल पिता ! इनके आगे मेरे अकेले की पेश नहीं चलती ।

मूए हूए जउ मुकत देहुगे - मुकत न जानै कोइला । ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत - तेरी पैज पिछंउडी होइला ।

अर्थ:- यदि तूने मुझे मरने के बाद मुक्ति दे दी, तेरी मुक्ति का किसी को पता नहीं लगना; ये पाडे मुझे नीच कह रहे हैं, इस तरह तो तेरी अपनी ही इज्जत कम हो रही है, क्या तेरी बँदगी करने वाला कोई व्यक्ति नीच रह सकता है ?

तू ज दइआल क्रिपाल कहीअत हैं - अतिभुज भइओ अपारला । फेर दीआ देहुरा नामे कउ - पंडीअन कउ पिछवारला । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1292)

**अर्थ:-** हे सुहणे राम ! तू तो सब पर, चाहे कोई नीच कुल का हो अथवा ऊँची कुल का दया करने वाला है, तू मेहर का घर है, (फिर तू) है भी बहुत बली और बेअंत । (क्या तेरे सेवक पर कोई तेरी मर्जी के बिना धक्का कर सकता है ?) (मेरी नामदेव जी की आरजू सुन के प्रभु ने) देहुरा मुझ नामदेव की तरफ फेर दिया, और पांडों की ओर पीठ हो गई ।

b. जउ गुरदेउ कंध नही हिरै । जउ गुरदेउ देहुरा फिरै । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1167)

**अर्थ:-** अगर गुरु मिल जाए तो शरीर (विकारों में पड़ के) विनाश नहीं (भाव, मनुष्य विकारों में प्रवृत्त नहीं होता, और ना ही उसकी सत्ता व्यर्थ जाती है); ऊँची जाति आदि के माण वाले मनुष्य गुरु की शरण आए बँदे पर दबाव नहीं डाल सकते, जैसे कि वह देहुरा नामदेव की तरफ पलट गया था जिसमें से उसे धक्के दे के निकाल दिया गया था; गुरु की शरण पड़े गरीब की रक्षा के लिए रब खुद पहुँचता है ।

c. हरि जुग-जुग भगत उपाइआ - पैज रखदा आइआ राम राजे । हरणाखस दुसट हरि मारिआ - प्रहलादु तराइआ । अहंकारीआ निंदका पिठ देइ - नामदेउ मुख लाइआ । जन नानक ऐसा हरि सेविआ - अंत लए छडाइआ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 451)

**अर्थ:-** परमात्मा हरेक युग में ही भक्त पैदा करता है, और, (बुरे समय में) उनकी इज्जत रखता आ रहा है (जैसे कि, प्रहलाद के जालिम पिता) चंदरे हरणाक्षस को परमात्मा ने (आखिर जान से) मार

दिया (और अपने भक्त) प्रहलाद को (पिता के दिए कष्टों से) सही सलामत बचा लिया (जैसे कि मंदिर में धक्के देने वाले) निंदकों और जाति-अभिमानियों को (परमात्मा ने) पीठ दे के (मात दे के) (अपने भक्त) नामदेव को दर्शन दिए । हे दास नानक ! जो भी मनुष्य ऐसे सामर्थ्य वाले परमात्मा की सेवा भक्ति करता है परमात्मा उसे (दोखियों द्वारा दिए जा रहे सब कष्टों से) आखिर बचा लेता है ।

2. कलजुग नामा भगत होइ - फेर देहुरा गाइ जिवाई । भगत कबीर वखाणीऐ - बंदी खाने ते उठ जाई ।

**अर्थः-** कलियुग में नामदेव नामक एक भक्त ने मंदिर को घुमाया और मृत गाय को जीवित कर दिया । ऐसा कहा जाता है कि कबीर जब चाहें जेल से बाहर चले जाते थे ।

धंना जट उधारिआ - सधना जात अजात कसाई । जन रविदास चमार होइ - चहु वरनां विच कर वडिआई ।

**अर्थः-** धन्ना नामक जाट (किसान) और साधना नामक निम्न जाति के कसाई के घर जन्मे लोग संसार सागर पार चले गए । रविदास को भगवान का भक्त मानकर चारों वर्ण उनकी प्रशंसा करते हैं ।

बेणि होआ अधिआतमी - सैण नीच कुल अंदर नाई । पैरी पै पाखाक होइ - गुर सिखां विच वडी समाई ।

**अर्थः-** संत बेनी एक अध्यात्मवादी थे, तथा तथाकथित निम्न नाई जाति में जन्मे सैन भगवान के भक्त थे । गुरु के चरणों पर गिरना

और उनकी धूल बन जाना सिखों के लिए महान समाधि है - उनकी जाति पर विचार नहीं किया जाना चाहिए ।

अलख लखाइ न अलख लखाई । (भाई गुरदास वर्णन - 12-15)

अर्थः- यद्यपि भक्तजन अदृश्य भगवान् का दर्शन करते हैं, फिर भी वे इसे किसी को नहीं बताते ।

कर के नीच सदावणा - ता प्रभ लेखै अंदर पाई । कलिजुग - नावै की वडिआई । (भाई गुरदास वर्णन - 1-16)

अर्थः- यदि कोई अब कर्ता होते हुए भी अपने अन्दर से इस भावना को मिटा दे और नीच कहलाना पसंद करे, तभी वह भगवान की कृपा में बना रह सकता है । कलियुग में केवल भगवान का नाम जपना ही महान माना जाता है ।

a. पाड़ पड़ोसण पूछ ले नामा - का पह छान छवाई हो । तो पह दुगणी मजूरी दैहउ - मो कउ बेढी देहु बताई हो ।

अर्थः- साथ की पड़ोसन ने पूछा - हे नामे ! तूने अपनी छपरी किस से डलवाई है ? मुझे बढ़ई के बारे में बता, मैं तेरे से दोगुनी मजदूरी दे दूँगी ।

री बाई - बेढी देन न जाई । देख बेढी रहिओ समाई । हमारै बेढी प्रान अधारा ।

अर्थः- हे बहन ! उस बढ़ई के बारे में (इस तरह) नहीं बताया जा सकता; देख, वह बढ़ई हर जगह मौजूद है और वह मेरे प्राणों का आसरा है ।

बेढी प्रीत मजूरी मागै - जउ को छान छवावै हो । लोग कुट्मब सभहु ते तोरै - तउ आपन बेढी आवै हो । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 657)

अर्थः- (हे बहन!) अगर कोई मनुष्य (उस तरखान से) कुल्ली बनवाए तो वह बढ़ई प्रीति की मजदूरी मांगता है; प्रीति भी ऐसी हो कि लोगों से, परिवार से, सबसे, मोह तोड़ ले; तो वह बढ़ई अपने आप आ जाता है ।

६. नामा माइआ मोहिआ - कहै तिलोचन मीत । काहे छीपहु छाइलै - राम न लावहु चीत ।

अर्थः- त्रिलोचन कहता है: हे मित्र नामदेव ! तू तो माया में फसा हुआ लगता है । ये अंबरे क्यों ठेक रहा है ? (रजाईयां चादरें धो-धो के बिछाए जा रहा है, धोबी वाले काम कर रहा है) परमात्मा के (चरणों) से चित्त क्यों नहीं जोड़ता ?

नामा कहै तिलोचना - मुख ते राम सम्हाल । हाथ पाउ कर काम सभ - चीत निरंजन नाल । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1375)

अर्थः- नामदेव (आगे से) उत्तर देता है: हे त्रिलोचन ! मुँह से परमात्मा का नाम ले; हाथ-पैर का इस्तेमाल कर के सारा काम-काज कर, और अपना चित्त माया-रहित परमात्मा से जोड़ ।

3. गोबिंद गोबिंद गोबिंद संग - नामदेउ मन लीणा । आढ दाम को छीपरो - होइओ लाखीणा ।

**अर्थः-** (भक्त) नामदेव जी का मन सदा परमात्मा के साथ जुड़ा रहता था (उस हर वक्त की याद की इनायत से) आधी कौड़ी का गरीब छींबा (धोबी), मानो, लखपति बन गया (क्योंकि उसे किसी की अधीनता ना रही) ।

बुनना तनना तिआग कै - प्रीत चरन कबीरा । नीच कुला जोलाहरा - भइओ गुनीय गहीरा ।

**अर्थः-** कपड़ा उनने, ताना तानने की लगन छोड़ के कबीर ने प्रभु-चरणों से लगन लगा ली; नीच जाति का गरीब जुलाहा था, गुणों का समुंदर बन गया ।

रविदास ढुवंता ढोर नीत - तिन तिआगी माइआ । परगट होआ साधसंग - हरि दरसन पाइआ ।

**अर्थः-** रविदास (पहले) नित्य मरे हुए पशु ढोता था, (पर जब से) उसने माया (का मोह) त्याग दिया, साधु-संगत में रहके प्रसिद्ध हो गया, उसको परमात्मा के दर्शन हो गए।रविदास (पहले) नित्य मरे हुए पशु ढोता था, (पर जब से) उसने माया (का मोह) त्याग दिया, साधु-संगत में रहके प्रसिद्ध हो गया, उसको परमात्मा के दर्शन हो गए ।

सैन नाई बुतकारीआ - ओहु घर-घर सुनिआ । हिरदे वसिआ पारब्रहम - भगता मह गनिआ ।

अर्थः- सैण (जाति का) नाई लोगों के अंदर-बाहर के छोटे-मोटे काम करता था, उसकी घर-घर शोभा हो चली, उसके हृदय में परमात्मा बस गया और वह भक्तों में गिना जाने लगा ।

इह बिध सुन कै जाटरो - उठ भगती लागा । मिले प्रतख गुसाईआ - धंना वडभागा । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 487)

अर्थः- हे

a. जब लग तागा बाहउ बेही । तब लग बिसरै राम सनेही । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 524)

अर्थः- जितने समय में मैं (कबीर) नाल के छेद में धागा बहाता हूँ, उतने वक्त में मुझे मेरा प्यारा प्रभु विसर जाता है (भाव, मुझे इतने समय के लिए भी प्रभु का विसरना अच्छा नहीं लगता) ।

b. सुइने की सूई रुपे का धागा । नामे का चित हरि सउ लागा । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 485)

अर्थः- मुझे (गुरु का शब्द) सोने की सुई मिल गई है, (उसकी इनायत से मेरी तवज्जो शुद्ध-निर्मल हो गई है, ये, जैसे, मेरे पास) चाँदी का धागा है; (इस सुई-धागे से) मुझ नामे (नामदेव) का मन प्रभु के साथ सिला गया है ।

c. तू कुन रे । मै जी । नामा । हो जी । आला ते निवारणा जम कारणा ।

अर्थः- हे (प्रभु) जी ! (अगर तू मुझसे पूछे) तू कौन है ? (तो) हे जी ! मैं नामा हूँ । मुझे जगत के जंजाल से, जो कि जमों (के डरों) का कारण है, बचा ले ।

पिंधी उभकले संसारा । भ्रम-भ्रम आए तुम चे दुआरा ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 694)

अर्थः- हे भाई ! जीव-टिंडें जैसे रहट के डिब्बे पानी में डुबकियां लेते हैं, संसार-समुंदर में डुबकियां ले रही हैं । हे प्रभु ! भटक-भटक के मैं तेरे दर पर आ गिरा हूँ ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

## ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"